

पंचदेव मंदिर परिसर में उत्साह के साथ मनाया आशिर्वाद दिवस समारोह



झुंझुनू, 13 अप्रैल। जिला मुख्यालय के दिल्ली-सीकर-जयपुर राजमार्ग स्थित श्री पंचदेव मंदिर परिसर में सोमवार को बाबा गंगाराम महोत्सव मंगला आरती, पांचो देव प्रतिमाओं के अभिषेक और भजनों की स्वर लहरियों के साथ मनाया गया। आशिर्वाद दिवस समारोह का शुभारम्भ बनारस से पधारे पंडित संतराम सामवेदी ने देव प्रतिमाओं की आरती एवं अभिषेक से किया। सुबह मंदिर प्रांगण में कलकत्ता की रामवतार अग्रवाल एण्ड पार्टी ने बाबा गंगाराम अमृतवाणी के सामुहिक पाठ की प्रस्तुति से सैकड़ों की संख्या में उपस्थित भक्तों का मन जीत लिया। दोपहर भजन कार्यक्रम का शुभारम्भ पंडित रामस्वरूप शास्त्री एवं श्रीराम शरण मादी ने श्रीबाबा गंगाराम की प्रतिमा के समक्ष दीप-प्रज्वलित कर किया। भक्ति रस से सराबोर भजन कार्यक्रम में शहर ही नहीं दूर-दराज से पधारे प्रवासी बड़ी संख्या में सामिल हुए। कलकत्ता के गायक एवं जन-कल्याण पत्रिका संपादक संजय अग्रवाल, शेखावाटी के ख्याति प्राप्त बाल भजन गायक लोकेश भट्ट, मुरारी भट्ट, सज्जन दाधीच, सीमा पण्डित एवं भिवानी से पधारी सत्यनारायण गर्ग एण्ड पार्टी ने जोरदार भजनों की स्वर लहरियों से श्रोताओं को झुमे पर मजबूर कर दिया। जिसमें मुख्य रूप से बाबा गंगाराम पधारे सब नाचों रे भक्तो... आशिर्वाद दिवस आया है भक्तों सब नाचो झुमो... पंचदेव दरबार सुहाना लगता है... इस अवसर पर बाबा गंगाराम के भजनों की तैयार की गई वीसीडी का विमोचन किया गया। आशिर्वाद दिवस समारोह में रामचन्द्र मोदी, योगेश बगडिया, अनिल देवड़ा, पुरूषोत्तम केजड़वाल, जुगलकिशोर पौदार, मनमोहन सराफ, अशोक केजड़वाल, प्रमोद मोदी सहित प्रवासी उपस्थित थे। मंदिर ट्रस्टी अनिल कुमार मोदी ने सभी का आभार जताया।

आर्ट ऑफ लिविंग झुंझुनू शाखा द्वारा आनन्दोत्सव का आयोजन

माई झुंझुनू। केशव विद्या मंदिर का खुला प्रांगण जिसमें चारों ओर रंग बिरंगे गुब्बारों से सजा खुला पंडाल एवं शहर की धर्मप्रेमी जनता व गणमान्यजनों की गरिमाय उपस्थिति में सम्पन्न हुई दिव्य अलौकिक भजन संतसंग की संगीत संध्या जिसे आयोजित किया था आर्ट ऑफ लिविंग झुंझुनू शाखा ने मीडिया पाटर्नर दैनिक भास्कर के साथ रविवार सांयकाल।

श्री श्री रविशंकर के परम योग्य शिक्षक ऋषि श्री नित्यप्रज्ञाजी एवं कार्तिक शाह सहित अन्य सहयोगी सत्संगी जब पण्डाल में आये तो कार्यकर्ताओं एवं साधकों ने उनके स्वागत में पलक पावंडे बिछा दिये- जय गुरुदेव के उद्घोष के साथ मंच तक ऋषि श्री नित्यप्रज्ञाजी को डोली में सम्मान मंचासीन करवाया गया और इसके पश्चात शुरू हुआ 2 घण्टों तक दिव्य भजन संगीत ज्ञानचर्चा का सुंदर चित्रण जिसका समापन गुरुदेव के सानिध्य में सबसे नाचते गाते भजनों की कर्णप्रिय प्रस्तुतियों के साथ किया। इसके पश्चात आतीशबाजी भी की गयी। ऋषि श्री नित्यप्रज्ञाजी ने भजन कीर्तन एवं ज्ञान चर्चा के दौरान आज के समय की महती आवश्यकता बोट देने के बारे में सभी को विस्तार से बताया समझाया कि बोट देना तथा जो व्यक्ति बोट नहीं दे रहे हैं उन्हें प्रेरित करके बोट डलवाना बहुत



फोटो : रामनिवास सोनी



फोटो : रामनिवास सोनी

जी.बी. मोदी में पृथ्वी दिवस पर ग्रीन जनरेशन अभियान



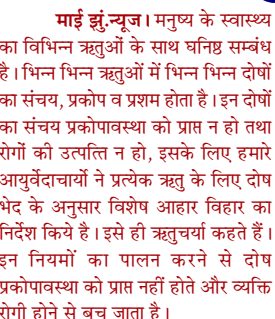
फोटो : रामनिवास सोनी

माई झुंझुनू, 22 अप्रैल। जी.बी. मोदी उच्च माध्यमिक विद्यालय के बाकरा स्थित नव निर्मित विद्यालय भवन में बुधवार को पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया। शिक्षक रामाकान्त शर्मा ने मुख्य अतिथि झुंझुनू चिकित्सा विभाग के मुख्य अधिकारी एल.के. शर्मा का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने पृथ्वी पर मण्डावा रहे संकट के बारे में अवगत करवाया। इन गंभीर बातों पर चर्चा कर रहे डॉ. शर्मा ने बच्चों के साथ प्रश्नोत्तरी के माध्यम से भू संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण के उपाय भी बताये। विद्यालय के प्राचार्य एस.एस. कुकरोती ने धन्यवाद अदा करते हुए ग्रीन जनरेशन अभियान व कार्बन फ्री अर्थ की परिकल्पना व्यक्त की। इस अवसर पर विद्यालय सचिव एडवोकेट वृजकिशोर अग्रवाल, शिक्षा अधिकारी आर.पी. सिंह सहित उप प्राचार्याय मंजू खण्डेलवाल एवं अन्य शिक्षकगण उपस्थित थे।

मुम्बई एवं पूना में प्रिया परिवार की सेमीनार

माई झुंझुनू। प्रिया परिवार के सेमीनार मुम्बई एवं पूना में किये गये जिन्हें कम्पनी निदेशक महेश नृनिवास एवं डायमण्ड सत्यप्रकाश बोला ने सम्बोधित किया। उन्होंने कम्पनी की भावी योजनाओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि नितस कम्प्युटर के कोर्सेज आज के समय को ध्यान में रखते हुए बनाये गये हैं।

बसन्त ऋतु में आहार विहार ऋतु चर्या



माई झुंझुनू। मनुष्य के स्वास्थ्य का विभिन्न ऋतुओं के साथ घनिष्ठ सम्बंध है। भिन्न भिन्न ऋतुओं में भिन्न भिन्न दोषों का संचय, प्रकोप व प्रशम होता है। इन दोषों का संचय प्रकोपावस्था को प्राप्त न हो तथा रोगों की उत्पत्ति न हो, इसके लिए हमारे आयुर्वेदाचार्यों ने प्रत्येक ऋतु के लिए दोष भेद के अनुसार विशेष आहार विहार का निर्देश किये हैं। इसे ही ऋतुचर्या कहते हैं। इन नियमों का पालन करने से दोष प्रकोपावस्था को प्राप्त नहीं होते और व्यक्ति रोगी होने से बच जाता है।

एक वर्ष की नियत अवधि में मुख्यतः गर्मी, सर्दी और वर्षा ये तीन मौसम आते हैं। इन तीनों मौसम में मनुष्य के शरीर में अलग अलग अनुभूतियाँ और परिवर्तन आते हैं। वस्तुतः तीन प्रकार के मौसम छः ऋतुओं- शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म वर्षा, शरद और हेमन्त में बँटे होते हैं। ये सभी मौसम एवं ऋतुओं के परिवर्तन सूर्य की गति पर निर्भर करते हैं। बसन्त ऋतु चैत्र- वैशाख, मार्च अप्रैल-मई में माना जाता है। बसन्त ऋतु में सर्वत्र प्रकृति का सौन्दर्य व्याप्त होता है। वातावरण पुष्पों की सुगंध व पक्षियों की कलरव से तथा पृथ्वी रंग बिरंगे फूलों की सुंदरता से व्याप्त होती है। सारी प्रकृति प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देती है। बसन्त ऋतु का प्रभाव- शारीरिक दृष्टि से इस ऋतु में कफ दोष प्रकृति हो जाता है। क्योंकि शरीर में संचित हुआ कफ सूर्य की गर्मी से पिघल जाता है इससे पाचन शक्ति में विकार उत्पन्न



हो जाते हैं। परिणामतः अग्निमांड्य तथा हल्लास जैसे रोग शरीर में उत्पन्न हो जाते हैं। सूर्य वातावरण की चिकनाई को अपनी किरणों से सोख लेता है। इससे ऋतुता उत्पन्न होती है जो दौर्बल्यकारक है। इस ऋतु में अम्ल, मधुर एवं लवण रस युक्त पदार्थों के सेवन से कफ की वृद्धि होती है।

अतः खांसी जुकाम आदि रोग विशेष आक्रमण करते हैं। पथ्य आहार विहार-प्रकृति कफ को संतुलित करने के लिए वमन- उल्टी इमेसिस चिकित्सा तथा तीव्र जस्य भस्त्रिका प्राणायाम करना चाहिए। भारी स्निग्ध, खट्टे तथा मीठे भोज्य पदार्थों का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए। दिन में नहीं सोना चाहिए। नित्य व्यायाम, उबटन तथा आंखों में अंजन आदि का प्रयोग करना चाहिए। सूर्योदय से पूर्ण भ्रमण करना स्वास्थ्यवर्धक है। सूती वस्त्र जो ढीले हो चटकीले रंगों के न हो पहनने चाहिए। सिर पर टोपी व छाते का प्रयोग करना चाहिए।

मौगा व अंकुरित चना, मक्खन लगी डबलरोटी, हरी सब्जियों का सूप, पुराने गेहूँ, चावल, चना और जौ की रोटी, मूँग राई, सरसों का तेल, सब्जियों में करेला, लहसुन, केले के फूल, जिमीकंद व नीम, सौंठ, पीपल, काली मिर्च, हरड़, बहेड़ा, आंवला, धान की बोल, खस का जल, लौकी पालक, नींबू तथा शहद का सेवन हितकर है। पुराने अनाज, कटु, तीक्ष्ण और कषाय रस युक्त पदार्थों का सेवन करना चाहिए। इस ऋतु में आसव, अरिष्ट, दाक्षासव जैसे द्रव्यों का सेवन बहुत उपयोगी रहता है। जल का सेवन पर्याप्त मात्रा में करना चाहिए।

अदरक के साथ उबला हुआ शहद मिला हुआ तथा वर्षा का जल लाभकारी है। हरड़ चूर्ण के साथ शहद मिलाकर लेना विशेष उपयोगी है। बाग बगीचों में प्राकृतिक छटा के साथ ध्रमण भी मन व शरीर को प्रसन्न रखते हैं।

अपथ्य आहार विहार -- बसन्त ऋतु में मसालेदार आहार न ले तेल की मालिस, दिन में सोना, नये अनाज का सेवन, उडद, मिष्ठान, दूध से बनी रबड़ी आदि गरिष्ठ भोजन, खजूर का फल, नारियल का पानी आदि भारी खाद्य पदार्थों का सेवन एवं धूप में घूमना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

आचार्य हरिसिंह रोहिल्ला-योग प्रा.चिकित्सा अग्रसेन भवन झुंझुनू मो. 09828486899

माई झुंझुनू डॉट कॉम ने किया सम्मान - ऋषि श्री

नित्यप्रज्ञाजी को माई झुंझुनू डॉट कॉम की ओर से संस्थापक केशरदेव तुलस्यान द्वारा अभिनन्दन पत्र भेंट कर महाराज श्री का स्वागत अभिनन्दन किया गया। महाराज श्री ने मुख्य सलाहकार परमेश्वर हलवाई एवं प्रबन्ध निदेशक डी एन तुलस्यान से आई माई झुंझुनू डॉट कॉम के बारे में जानकारी प्राप्त कर इसकी सराहना की।



मई माह के व्रतोत्सव एवं पर्व- पं. महावीरप्रसाद शर्मा

माई झुंझुनू। इस माह एक मई से 31 मई तक की अर्वाध वाले व्रत, पर्व -

1. सर्वप्रथम दो मई बैसाख शुक्ला अष्टमी शनिवार को श्री जानकी जयन्ती का पर्व आ रहा है। हिन्दू समाज में जिस प्रकार श्रीराम नवमी का महत्त्व है उसी प्रकार जानकी नवमी का है जिस प्रकार अष्टमी तिथि भगवती राधा तथा भगवान श्रीकृष्ण के आविर्भाव से सम्बद्ध है। उसी प्रकार नवमी तिथि भगवान श्रीराम एवं भगवती सीता के आविर्भाव की तिथि होने से परमादरणीय है। श्री जानकी नवमी के पावन पर्व पर जो ब्रत रखता है तथा भगवान श्रीरामचन्द्र जी सहित भगवती श्री सीता का अपनी शक्ति के अनुसार भक्ति भाव पूर्वक विधि विधान से सोत्साह हितकर है। पुराने अनाज, कटु, तीक्ष्ण और कषाय रस युक्त पदार्थों का सेवन करना चाहिए। इस ऋतु में आसव, अरिष्ट, दाक्षासव जैसे द्रव्यों का सेवन बहुत उपयोगी रहता है। जल का सेवन पर्याप्त मात्रा में करना चाहिए।
- अदरक के साथ उबला हुआ शहद मिला हुआ तथा वर्षा का जल लाभकारी है। हरड़ चूर्ण के साथ शहद मिलाकर लेना विशेष उपयोगी है। बाग बगीचों में प्राकृतिक छटा के साथ ध्रमण भी मन व शरीर को प्रसन्न रखते हैं।
- अपथ्य आहार विहार --** बसन्त ऋतु में मसालेदार आहार न ले तेल की मालिस, दिन में सोना, नये अनाज का सेवन, उडद, मिष्ठान, दूध से बनी रबड़ी आदि गरिष्ठ भोजन, खजूर का फल, नारियल का पानी आदि भारी खाद्य पदार्थों का सेवन एवं धूप में घूमना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
- आचार्य हरिसिंह रोहिल्ला-योग प्रा.चिकित्सा अग्रसेन भवन झुंझुनू मो. 09828486899



सांयकाल में भगवान श्री विष्णु ने प्रह्लाद का अभीष्ट सिद्ध करने के लिए नृसिंह रूप में स्वयं को प्रकट किया था अतः यह पर्व भी पालनीय है इससे सौख्य भोग और मोक्ष प्राप्त होता है। 4. वैशाखी पूर्णिमा बुद्ध पूर्णिमा नौ मई शनिवार को है। इस दिन पीपल पूर्णिमा भी है जिसमें पीपल का विवाह भी धार्मिक जन तुलसी विवाह के समान ही आयोजित करते हैं। इसी दिन वैशाख स्नान समाप्त हो जाता है। ठण्डे जल पात्रों, बिजनों का दान भी महत्वपूर्ण है। 5. 12 मई को मंगलवार को श्री गणेश चतुर्थी का महिलाओं के लिये सौभाग्यप्रद व्रत है इसमें महिलाएँ रात्रि में चन्द्रोदय के पश्चात चन्द्र को अर्घ्य देकर भोजन करती हैं। 6. बीस मई बुधवार को अपरा एकादशी-भद्रकाली एकादशी सबकी है। 7. 24 मई रविवार को वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ प्रकार ब्रज मंडल में राधिकाजी का जन्म उत्सव बड़े उत्साह से मनाया जाता है उसी तरह मिथिला एवं अवध में श्री किशोरीजू- सीताजी का जन्मोत्सव मनाया जाता है 2. पांच मई मंगलवार को मोहिनी एकादशी का व्रतपावसा है। इस दिन माधव मास की एकादशी का व्रत सभी प्रकार के पारमार्थिक पुरुषार्थ प्रदान करने वाला है। 3. सात मई गुरुवार को श्री नृसिंह जयन्ती है। यह वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को

झुंझुनू एकेडमी में मनाया मानव एकता दिवस

माई झुंझुनू। विन्डम सिटी स्थित झुंझुनू एकेडमी स्कूल में लायनेस क्लब की उपस्थिती में मानव एकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर लॉर्डनेस क्लब सिल्वर, झुंझुनू की अध्यक्ष सुमन शर्मा उपाध्यक्षा रूचिमणी भैड़ा, शशि वशिष्ठ क्लब की सचिव अग्रवाल, हरिष तुलस्यान, राजेश केजड़वाल, एडवोकेट मनोज शर्मा, प्रदीप पाटेलिया, श्रवण कुमार केजड़वाल, डीएन तुलस्यान, तारचन्द्र गुप्ता, रमेश गाडिया, राधेश्याम तुलस्यान, सत्यनारायण हलवाई, सुशील तुलस्यान, भरत तुलस्यान, रमेश अग्रवाल, सुरेश पंसार, रामचन्द्र मोदी, कन्हैयालाल केडिया, पवन केजड़वाल, बंटी पंसार, श्रीकांत पंसार, प्रमोद खंडेलिया, कमल केजड़वाल, संजय नांगलिया, ओमप्रकाश गाडिया, विनोद लाट, विजय गाडिया, बजरंगलाल सौलानेवाला, विनय बिसाडवाला, विकास तुलस्यान, अमित गाडिया, श्रवण सैनी सहित अन्यजन उपस्थित थे। आनन्दोत्सव समापन के पश्चात ऋषि श्री नित्यप्रज्ञाजी व अन्य उनके साथ आये सहयोगियों का पवन केजड़वाल के निवास तथा प्रातः दस बजे मनीष वृजकिशोर अग्रवाल के निवास पर आकर गन्तव्य स्थान की ओर रवाना हुए। केजड़वाल एवं अग्रवाल परिवार द्वारा ऋषिपर का स्वागत अभिनन्दन किया गया।

न्यू झुंझुनू एकेडमी में समारोह पूर्वक मनाया परीक्षा परिणामः

जीवेम शिक्षण समूह की न्यू झुंझुनू एकेडमी इकाई में कक्षा 6,7,9 व 11- विज्ञान, चाणित्य, कला वर्ग के परिक्षार्थियों को समारोह पूर्वक परीक्षा परिणाम सुनाया गया। विद्यार्थी व अभिभावकों की मांग को देखते हुए जीवेम समूह के चैयरमैन दिलिप मोदी ने कहा कि विभिन्न महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु क्षेत्र के विद्यार्थियों की आवश्यकता व समय की मांग को देखते हुए जीवेम समूह समग्र शोध व उच्च स्तरीय शिक्षण तकनीक के साथ विषय विशेषज्ञ अध्यापकों की टीम के द्वारा छात्र छात्राओं को फाउण्डेशन कोर्स के माध्यम से सभी महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु तैयार करेगा। विद्यालय के प्रधानाचार्य मोहनलाल धायल ने अभिभावकों के विचार लेते हुए कहा कि विद्यार्थी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का ज्ञान होना परम आवश्यक है। समारोह के दौरान विभिन्न कक्षाओं के मेरिटोरियस विद्यार्थियों का सम्मान किया गया तथा सभी छात्र-छात्राओं को सफलता हेतु बधाई देते हुए नए सत्र की शुभकामनाएं दी गयीं। इस अवसर पर बोलेते हुए जीवेम प्रबंध निदेशक श्रीमती नीरजा मोदी ने कहा कि सोमवार को न्यू झुंझुनू एकेडमी परिसर में शाहदार स्वागत समारोह प्रवेशोत्सव मनाया जाएगा जिसमें नये आने वाले सभी विद्यार्थियों का स्वागत किया जायेगा।

तुलसीदास जी ने संगम स्थित इस अक्षय वट को तीर्थराज का छत्र कहा है।

संगम सिंहासन सुटि सोहा। छत्रु अखयवटु मुनि मनु मोहा ॥ इसी प्रकार तीर्थों में पंचवटी का भी विशेष महत्व है। पांच वटों से युक्त स्थान को पंचवटी कहा गया है। भगवान श्रीराम ने कुंभज ऋषि के परामर्श से बनवास काल में श्री सीताजी और लक्ष्मणजी के साथ यहां निवास किया था। हानिकारक गैसों को नष्ट करके वातावरण को शुद्ध करने में वटवृक्ष का विशेष महत्व है। इसी वटवृक्ष के नीचे सावित्री ने अपने पतिव्रत से मृत पति को पुनः जीवित किया था। तब से यह व्रत वट सावित्री के नाम से किया जाता है। ज्येष्ठ मास के व्रतों में वट सावित्री व्रत एक प्रभावी व्रत है। महिलाएँ अपने अखंड सौभाग्य एवं कल्याण के लिये यह व्रत करती हैं। सौभाग्यवती महिलाएँ ब्रह्मा के साथ ज्येष्ठ त्रयोदशी से अमावस्या तक तीन दिनों का उपवास रखती हैं। उपवास में असमर्थ होने पर त्रयोदशी को रात्रि भोजन चतुर्दशी को अर्घाचित तथा अमावस्या को उपवास कर प्रतिपदा को पारण करना चाहिए। अमावस्या को एक बांस की टोकरी में धान्य पर ब्रह्मा और ब्रह्म सावित्री तथा दूसरी टोकरी में सत्यवान एवं सावित्री की प्रतिमा स्थापित कर वट के समीप यथा विधि पूजन करना चाहिए। साथ ही यम का भी पूजन करना चाहिए। वट की पूजन एवं मूल में जल सिंचन भी महिलाएँ करती हैं। वट की एक सौ आठ परिक्रमा तथा यथाशक्ति सूत भी लपेटा जाता है। नमो वैवस्वताय इस मंत्र से वटवृक्ष की प्रदक्षिणा करनी चाहिए। अवैधव्यं च सौभाग्यं देहि त्वं मम सुव्रते। पुत्रान पौत्रंश्च सौरव्यं च गृहणाथर्व नमोस्तुते इमं सत्रं से सावित्री को अर्घ्य देना चाहिए। सौभाग्य विद्यारी का दान भी ब्राह्मण को दिया जाता है।

पंडित महावीर प्रसाद पारीक, शास्त्री एम ए, संस्कृत, बीदासर- बिसाऊ मोबाईल- 9460513758